कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#8. कर्मवीर कथा (Karmveer Katha)

मङ्गलम् (Mangalam) : संपूर्ण परीक्षा नोट्स

यह पाठ विभिन्न **उपनिषदों** (जैसे ईशावास्य, कठ, मुण्डक) से संकलित **पाँच पद्यात्मक मंत्रों** का संग्रह है। **उपनिषद** वैदिक साहित्य के अंतिम भाग हैं और ये **दर्शनशास्त्र** के सिद्धांतों को प्रकट करते हैं। इन सभी मंत्रों में **परमपुरुष परमात्मा** की महिमा का वर्णन किया गया है।

1. सत्य का आवरण (ईशावास्य उपनिषद से)

- **मंत्र का भाव: सत्य** का मुख **सोने जैसे पात्र** (हिरण्मयेन पात्रेण) से ढका हुआ है। हे **पूषन्** (सत्यधर्माय/सूर्य/पोषक देवता)! **सत्य-धर्म** (सत्य के ज्ञान) की प्राप्ति के लिए उस **आवरण** (ढक्कन) को हटा दीजिए।
- **मूल संदेश:** सांसारिक मोहमाया (स्वर्ण आवरण) के कारण हम सत्य (ईश्वर) के दर्शन नहीं कर पाते हैं।

2. आत्मा का स्वरूप (कठ उपनिषद से)

- **मंत्र का भाव:** यह **आत्मा** (परमात्मा) **अणु** (छोटे से छोटा) से भी **छोटा** (अणोरणीयान्) और **महान्** से भी **महान्** (महतो महीयान्) है। यह प्राणी के हृदय रूपी **गुफा** (गुहायाम्) में छिपा हुआ है।
- **दर्शन: कामना रहित** (अक्रतुः) व्यक्ति, उस **शोक रहित** (वीतशोको) परमात्मा के प्रसाद (कृपा) से **आत्मा की महिमा** को देखता है।

कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#8. कर्मवीर कथा (Karmveer Katha)

3. सत्य की विजय (मुण्डक उपनिषद से)

- **मंत्र का भाव: सत्य की ही जीत** होती है, **झूठ की नहीं (नानृतम्)**।
- **देवयान मार्ग: सत्य** के द्वारा ही **देवताओं के मार्ग** (देवयानः पन्था) का विस्तार होता है। **आप्सकाम** (सत्य की इच्छा वाले) ऋषिगण इसी मार्ग से चलकर उस स्थान को प्राप्त करते हैं, जहाँ **सत्य का परम भंडार** है।

4. नाम और रूप का त्याग (मुण्डक उपनिषद से)

- **मंत्र का भाव:** जिस प्रकार **बहती हुई नदियाँ** (स्यन्दमानाः नद्यः) अपने **नाम और रूप** (नदी नाम) को **त्यागकर** (विहाय) **समुद्र** में विलीन हो जाती हैं।
- **विद्वान का गमन:** उसी प्रकार **विद्वान** पुरुष भी अपने **नाम और रूप** से **मुक्त** होकर (विमुक्तः) उस **दिव्य** और **परात्पर** (महान् से भी महान्) **पुरुष** (ब्रह्म) को प्राप्त कर लेता है।

5. मृत्यु पर विजय (श्वेताश्वतर उपनिषद से)

- **मंत्र का भाव:** मैं उस **महान् पुरुष** (परमात्मा) को जानता हूँ, जो **अंधकार** (अज्ञान) से **परे** है और **सूर्य के समान प्रकाश** (आदित्यवर्णं) स्वरूप है।
- **अंतिम संदेश:** जो व्यक्ति उस **परमात्मा** को जानता है, वह **मृत्यु** (मृत्युम्) से **पार** हो जाता है। **मोक्ष** (परमात्मा की प्राप्ति) का इसके **अलावा कोई अन्य मार्ग नहीं** है।

कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#8. कर्मवीर कथा (Karmveer Katha)

✓ परीक्षा के लिए मुख्य बिन्दु (Key Points for Exam)

1. **पाठ का स्रोत:** विभिन्न **उपनिषद** (जैसे ईशावास्य, कठ, मुण्डक, श्वेताश्वतर)।
2. **उपनिषदों का विषय: दर्शनशास्त्र** के सिद्धांत और **परमात्मा** की महिमा।
3. **सत्य का मुख: हिरण्मयेन पात्रेण** (सोने जैसे पात्र) से ढका है।
4. **आत्मा का स्वरूप: अणोरणीयान्** (अणु से छोटा) और **महतो महीयान्** (महान से महान)।
5. **किसकी विजय होती है: सत्य** की। (**नानृतम्** - असत्य की नहीं)।
6. **नदी का अंत:** नदियाँ अपने **नाम और रूप** को छोड़कर **समुद्र** में मिलती हैं।
7. **मृत्यु को पार करने का उपाय: महान् पुरुष** (परमात्मा) को **जानकर**। (दूसरा कोई मार्ग नहीं है)।